ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 18 अंक-1 अप्रैल-I, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

महिलाओं की भागीदारी बगैर विकास संभव नहीं

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। महिला दिवस के अवसर पर ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'बी बोल्ड फॉर चेन्ज' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के अनेक प्रतिष्ठित क्षेत्रों से जुड़ी हुईं महिलाओं ने शिरकत की।

कार्यक्रम में गोलमेज पर अपने विचार रखते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं ब्र.कु. चक्रधारी, राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य व पॉवर फाउण्डेशन की अध्यक्षा शमीना शफीक, काउन्सलर मनदीप तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य व पॉवर फाउण्डेशन की अध्यक्षा शमीना शफीक ने कहा कि अगर हम सच में महिलाओं के विकास के लिए कार्य करना चाहते हैं, तो पहले महिलाओं को एक-दूसरे का सहयोग करना बहुत आवश्यक है। आज हम देखते हैं कि समाज में महिलाओं का स्तर काफी बेहतर हुआ है।

उन्होंने कहा कि महिलाएँ समाज की धुरी हैं, उनके परिवर्तन से ही समाज व देश का विकास संभव है, लेकिन पुरुषों के योगदान के बिना ये संभव नहीं हो सकता।

करोल बाग की पूर्व काउन्सलर मनदीप ने कहा कि हमें स्वयं को कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। नारी स्वयं में एक शक्ति है। उन्होंने कहा कि जब हम दूसरों को आगे बढ़ते देख खुश होते हैं, तब हमारे जीवन में बोल्डनेस आती है।

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, गुरूग्राम की अध्यक्षा आशा शर्मा ने कहा कि महिलाएँ आज तक सिर्फ सुनती आई हैं, लेकिन अभी बदलाव का समय है। उन्होंने कहा कि बोल्ड होने का तात्पर्य है, कि चीज़ें जैसी हैं उन्हें वैसा स्वीकार करना। सिल्वर लाइनिंग फाउण्डेशन की अध्यक्षा प्रीति मोंगा ने कहा कि मैं पचास वर्षों से नेत्रहीन हूँ। मेरे जीवन में कई ऐसे पल आए जब मैंने अपने जीवन को समाप्त करने की ठान ली थी। लेकिन मेरे अंदर से एक आवाज़ आती थी कि नहीं, एक अवसर और लो। मैंने अंदर की आवाज़ को सुनकर बोल्ड निर्णय लिया कि मुझे जीवन में कुछ विशेष करना है। आज मैं उन लोगों के लिए कार्य कर रही हूँ जो मेरे जैसे हैं। मेरा यही लक्ष्य है कि मैं स्वयं के परिवर्तन से दूसरों को प्रेरित करूँ।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज हम महिलाओं के विकास के लिए बहुत कार्य कर रहे हैं। लेकिन उससे भी अधिक आवश्यकता उन्हें संस्कारवान बनाने की है। उन्होंने कहा कि कई बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम सिखा नहीं सकते, लेकिन हमारे व्यवहारिक जीवन से लोग स्वयं ही सीखते हैं। आध्यात्मिकता हमें व्यवहार कुशलता के साथ-साथ धैर्यवान भी बनाती है।

इस अवसर पर ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें परिस्थितियों से कभी घबराना नहीं चाहिए। समाज में जब भी कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता है तो चुनौतियाँ तो आती ही हैं। हमें उन चुनौतियों का सामना करना है। उन्होंने कहा कि कोई भी परिवर्तन अचानक नहीं होता, हम जिस परिवर्तन को लाना चाहते हैं, उसके लिए निरंतर प्रयास ज़रूरी है। कार्यक्रम में स्वान्त: सुखाय महिला संगठन की अध्यक्षा सुमन महेश्वरी, उपकार फाउण्डेशन की अध्यक्षा रेखा बन्खा, आई.पी.एस. अनुपम कुलश्री, कम्पनी सेक्रेट्री की फेलो मेम्बर दिव्या टण्डन तथा अन्य गणमान्य महिलाओं ने अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही कार्यक्रम में अलग-अलग तरह की एक्टिविटी भी कराई गई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. हुसैन बहन ने किया।

बिना पवित्रता नव सृष्टि का निमार्ण संभव नहीं

संत स्नेह मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मनोरमा। साथ हैं महामण्डलेश्वर श्री चन्द्रशेखरनंद जी, महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानंद जी तथा महामण्डलेश्वर मंदाकिनी जी।

राजिम-छ.ग.। महामण्डलेश्वर श्री चन्द्रशेखरनंद जी,दिल्ली ने कुम्भ मेले के अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवाकेन्द्र में आयोजित संत स्नेह मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की पवित्रता, साहस और संयम सभी को आकर्षित किये बिना नहीं रहती। मैं भी इसी आकर्षण से खींचा चला आया।

मुम्बई से आये महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानंद ने कहा कि हर व्यक्ति को ब्रह्माकुमारी संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू में एक बार अवश्य जाना चाहिए। वहाँ की जीवन शैली को जब हर व्यक्ति जीवन में अपनायेगा तभी उसे सही दिशा मिलेगी। किसी को योगी बनना है तो अवश्य यहां का आध्यात्मिक ज्ञान समझे।

इलाहाबाद से आयीं ब्र.कु.मनोरमा ने कहा कि नव सृष्टि के सृजन में पवित्रता का महत्वपूर्ण योगदान है। केवल ब्रह्मचर्य में रहना ही पवित्रता नहीं बल्कि मन-वचन-कर्म से भी किसी भी प्रकार की अपवित्रता न हो। संस्कार से ही संस्कृति का निर्माण होता है, श्रेष्ठ पवित्र व्यवहार की आवश्यकता है। वृंदावन से आये महामण्डलेश्वर नवलगिरी महाराज ने कहा कि जीवन में विकार आने से मानव स्वयं को भूल जाता है।

अयोध्या से आयीं महामण्डलेश्वर मंदाकिनी जी ने कहा कि पुरुष व नारी दोनों को समान महत्व देना चाहिए। नारियों को आगे बढ़ाने में ही देश की शान है।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.पुष्पा ने सभी संतों का स्वागत करते हुए कहा कि आप संतजन ही अपनी पवित्रता के बल से इस प्राचीन भारत देश को संभाले हुए हैं। नगरपालिका अध्यक्ष विजय गोयल ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। बिलासपुर की ब्र.कु.राखी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। ब्र.कु.विद्या ने सभी का स्वागत किया।